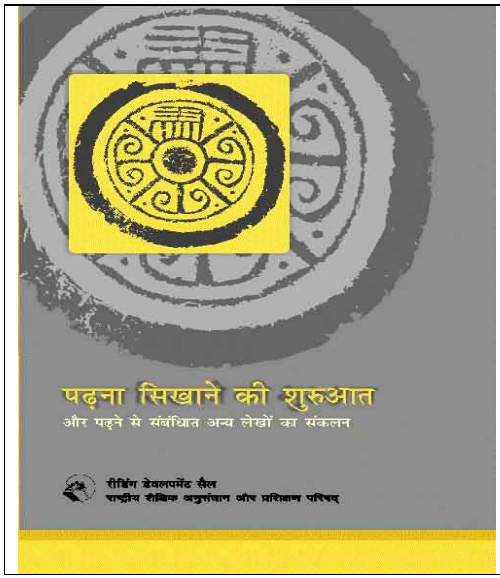

पढ़ना सिखाने की शुरुआत

संकलन एवं संपादन – लता पाण्डे

प्रकाशक	एन.सी.ई.आर.टी.
प्रकाशन वर्ष	नवंबर 2008
शब्द चिह्न	रीडिंग डेवलपमेंट सैल
मूल्य	रु. 55 /-
ISBN	978-81-7450-911-6
संस्करण	प्रथम
पृष्ठ संख्या	68
वर्गीकरण	पढ़ने से संबंधित अन्य लेखों का संकलन
भाषाओं में उपलब्ध	हिन्दी

पढ़ना सिखाने की शुरुआत

पढ़ने की क्षमता इस अर्थ में शिक्षा की बुनियाद है कि इसके बगैर किसी भी विषय की पढ़ाई की कल्पना नहीं की जा सकती। यद्यपि पढ़ना किसी भी आयु में सीखा जा सकता है किन्तु बचपन में ही इसे सीख लेना और पढ़ने के कौशल में दक्षता प्राप्त कर लेना जीवन की अन्य चुनौतियों को न केवल आसान बना देता है, बल्कि उनमें एक विशेष प्रकार का उत्साह और आनन्द भी भर देता है। कारण यह है कि दुनिया में अर्थ तलाशने की चाह बच्चे इतनी तीव्रता से महसूस करते हैं कि वे जो भी सुनते, देखते और पढ़ते हैं, उसमें अपने महत्त्व का कुछ–न–कुछ अवश्य ढूँढ़ते हैं। बाल–मनोविज्ञान के इस सत्य के आलोक में देखें तो हमें लगेगा कि प्रारंभिक शिक्षा की व्यवस्था में इस समय एक बड़ी चुनौती पढ़ना सीखने की विधियों में सुधार लाने की है। पारम्परिक विधियाँ वर्णमाला के अक्षरों और उनकी ध्वनियों पर सबसे पहले ध्यान देती हैं और इस दौरान, बच्चों में स्वाभाविक रूप से पाई जाने वाली अर्थ की चाह की अनदेखी करती हैं। अक्षर ज्ञान होने के पश्चात इस ओर ध्यान दिया जाता है, लेकिन तब तक बहुत से बच्चों का धैर्य समाप्त हो चुकता है। पढ़ने से मिलने वाले आनन्द और आत्मविश्वास के अभाव में वे दूसरी कक्षा तक आते–आते स्कूल के पाठ्यक्रम की दृष्टि से इतना पिछड़ जाते हैं कि वे स्वयं को असफल महसूस करने लगते हैं। यदि उनके माता–पिता स्वयं शिक्षित नहीं हैं तो उनका धैर्य और भी जल्दी चुक जाता है। नतीजा यह होता है कि बच्चे स्कूल आना छोड़ देते हैं। हमारे देश में यह दुर्घटना आज भी काफी बड़े पैमाने पर घट रही है। इस स्थिति का एक उपचार पढ़ना सिखाने की विधियों में, आरम्भ से ही अर्थ की खोज का समावेश करना है। यह तभी संभव है जब हम अपने शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रमों द्वारा पढ़ने की वैकल्पिक समझ को शिक्षकों तक पहुँचाएँ।

क्या कहते हैं लेख

1. पढ़ना सिखाने की शुरुआत

पढ़ना सीखना बच्चे के लिए आनंददायी बनता है या एक दुरूह प्रक्रिया, यह इस बात पर निर्भर करता है कि पढ़ना सीखने के शुरुआती दौर में वह कैसे अनुभवों से गुजरता है। अगर बच्चे को पढ़ना सिखाने की शुरुआत सार्थक संदर्भों से की जाए तो पढ़ना बच्चे के लिए सुखद बन जाता है और उसमें आगे और पढ़ने की तीव्र इच्छा पनपने लगती है। बच्चे को पढ़ना सिखाने की शुरुआत कैसे की जाए? **पढ़ना सिखाने की शुरुआत** इसी जानकारी पर आधारित है।

2. पढ़ना यानी एक सृजनात्मक और संरचनात्मक अनुभव

पढ़ना एक स्वाभाविक प्रक्रिया है जो पाठक को छपी सामग्री से कहीं आगे ले जाती है। प्रसिद्ध मनोभाषाविद् फ्रेंक स्मिथ ने पढ़ने की समझ को अपनी बहुचर्चित पुस्तक **अंडरस्टैंडिंग रीडिंग** में रोचक ढंग से प्रस्तुत किया है। **पढ़ना यानी एक सृजनात्मक और संरचनात्मक अनुभव** लेख में पढ़ने से संबंधित फ्रेंक स्मिथ के विचार दिए गए हैं।

3. पढ़ना सिखाने में शिक्षक की भूमिका

पढ़ने का कौशल आत्मीयता का याचक है। शिक्षक की स्वयं की पढ़ने की समझ, उसका स्नेहिल व्यवहार, बच्चे पर किया गया विश्वास पढ़ने का वातावरण सहज ही निर्मित कर लेते हैं। शिक्षक स्वयं पढ़ाने के बदले धीरे–धीरे विकसित होने वाले इस पढ़ने के कौशल का किस प्रकार उद्दीपक बने? बच्चे की पढ़ना सीखने की नैसर्गिक इच्छा का किस प्रकार माध्यम बने? इन्हीं सवालों का जवाब दे रहा है लेख **पढ़ना सिखाने में शिक्षक की भूमिका**।

4. पढ़ने के लिए समय

पढ़ना बच्चे की प्रगति के लिए एक आधारभूत कौशल और माध्यम है। यही कारण है कि कई देशों में पढ़ने के लिए आरंभिक कक्षाओं में अलग से समय दिया जाता है। **पढ़ने के लिए समय** के अंतर्गत बच्चों की शिक्षा में पढ़ने, पढ़ने के स्थान और पढ़ने की स्थिति को लेकर की गई बातचीत दी गई है।

5.पढ़ाई पहली कक्षा की

विद्यालय में पहले ही दिन बच्चे को कुछ सार्थक पढ़ने को मिले तो उसकी खुशी की सीमा नहीं रहती। पहले ही दिन पढ़ लेने की, कुछ अर्थ ढूँढ़ लेने की सफलता उसे सुखद एहसास कराती है कि मैंने खुद कुछ पढ़ा। यह सार्थकता पढ़ने की दिशा में बच्चे के नन्हे कदम आगे बढ़ाती है। इसलिए शिक्षकों को ऐसे रुचिपूर्ण संदर्भों की रचना कक्षा में करनी ही होगी। कैसे? इस सवाल का जवाब दे रहा है एक शिक्षक का अनुभव आधारित लेख **पढ़ाई पहली कक्षा की**।

6. पढ़ने का आकलन कैसे करें

पढ़ना सिखाने की प्रक्रिया का ही महत्वपूर्ण अंग है पढ़ने का आकलन। आकलन किस प्रकार किया जाए? कब किया जाए? पढ़ने के आकलन के दौरान किन बातों का ध्यान रखा जाए? इन्हीं सब मुद्दों की चर्चा कर रहा है लेख **पढ़ने का आकलन कैसे करें?**

7. क्रमिक पुस्तकमाला–*बरखा*

पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों के लिए एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा क्रमिक पुस्तकमाला विकसित की गई है–*बरखा*। इस पुस्तकमाला की चालीस कहानियाँ पाँच कथावस्तुओं में विस्तारित हैं। बच्चों के रोज़मर्रा के जीवन और परिवेश से जुड़ी यह कहानियाँ बच्चों को स्वयं समझ के साथ पढ़ने के अवसर देंगी। इन कहानियों को पढ़ने से बच्चों में अधिक से अधिक पढ़ने की ललक जगेगी। **कक्षा में *बरखा* का इस्तेमाल कैसे करें, किन बातों को ध्यान में रखें? जानने के लिए पढ़िए लेख क्रमिक पुस्तकमाला–*बरखा*।**

8. कहानी कहाँ खो गई

भारत में कहानी सुनाने की लंबी परंपरा रही है। लेकिन औद्योगीकरण के कारण आए सामाजिक संरचना में बदलाव के कारण कहानी कहीं गायब होती जा रही है। कहानी के शैक्षिक महत्त्व को सभी शिक्षाविद् स्वीकारते हैं। इसलिए सभी देशों में कहानी कला को पुन: प्रोत्साहन दिए जाने पर बल दिया जा रहा है। अंतर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर इस दिशा में क्या प्रयास किए जा रहे हैं, वह कितने सार्थक हैं? पढ़िए **कहानी कहाँ खो गई** लेख में।

9. कहानी सुनाने के बाद

कहानी बच्चों को आनंदित करती है। कहानी सुनने के और भी कई लाभ हैं। कहानी से बच्चे सब्र से सुनना, अनुमान लगाना, पात्रों तथा घटनाक्रम को याद रखना तो सीखते ही हैं इससे उनकी एकाग्रता

और स्मरणशक्ति का भी प्रशिक्षण होता है। **कहानी सुनाने के बाद** लेख में कहानी की अन्य शैक्षणिक उपयोगिताओं की चर्चा है।

10. हर बच्चे को मिली किताब

एक बार बच्चे का किताबों की दुनिया से परिचय हो जाए, तो वह उसी में रच–बस जाना चाहता है। किताबों को बच्चों तक ले जाने और बच्चों को किताबों तक ले जाने के उद्देश्य से रीडिंग डेवलपमेंट सैल, एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा बाल पुस्तक मेले का आयोजन प्राथमिक विद्यालय, पैंठा, गोवर्धन में किया गया। जिसमें बच्चों को किताबों के अनोखे संसार में जाने का अनूठा अवसर मिला। **हर बच्चे को मिली किताब** में इस बालपुस्तक मेले की रपट प्रस्तुत है।